IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# अफगानिस्तान में भारत की 'सॉफ्ट पॉवर' रणनीति और पाकिस्तान की विफलता

**डॉ. प्रकाश सिंह बादल**

**अतिथि व्याख्याता राजनीति विज्ञान विभाग**

**शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुंदा जिला बालोद (छ.ग.)**

**सारांश :–**

यह आलेख भारत और अफगानिस्तान के बीच सहयोगी दृष्टिकोण को दर्शाता है और अफगानिस्तान में अनेक चुनौतियों के बावजूद भारत सॉफ्ट पॉवर नीति का अनुसरण किया ताकि दोनों देशों के मध्य प्राचीन काल से चले आ रहे मधुर संबंधो में कोई वैमनस्य न उत्पन्न होने पाये और अनवरत विश्वास का पुल बना रहे। 09/11 की घटना के बाद भारत अपनी सॉफ्ट पॉवर दृष्टिकोण के माध्यम से युद्धग्रस्त देश अफगानिस्तान में सैन्य रूप से शामिल होने के बजाय सहायता संचालित विदेश नीति के माध्यम से वहां के लोगों के दिलों दिमाग मे विश्वास जीतने का प्रयत्न कर रहा है। पाकिस्तान के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ढंग से बार–बार भारत द्वारा अफगानिस्तान मे संचालित मानवीय एवं बुनियादी ढाँचो के विकास में विघ्न/बाधा डालने का प्रयत्न किया, फिर भी उसकी कोशिश की अवाम जनता भारत को विकास पुरूष के रूप में देखती है और आपसी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की जुड़ाव को भीअभिव्यक्त करती है। भारत अफगानिस्तान केसाथ प्राचीन काल काल से ही अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाने की दिशा में अग्रसर रहा है और तत्कालीन समय में अफगानिस्तान की बदलती परिस्थिति में भी सुव्यवस्थित ढंग से सॉफ्ट पावर दृस्टिकोण के सम्वन्ध माध्यम से आपसी सम्बंध को बल प्रदान कर रहा है, उसका मुख्य रूप से विश्लेषण शोध पत्र में किया गया है। इसी सॉफ्ट पॉवर नीति की वजह से भारत अफगानिस्तान में पाकिस्तान की रणनीतिक चाल को भी विफलता की तरफ मोड़ने में भी सहायक साबित हो रहा है, उसको भी शोध पत्र में दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

**मुख्य शब्द** :– सॉफ्ट पॉवर, प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति, बुनियादरी ढांचा

**प्रस्तावना:–**

अफगानिस्तान के प्रति भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पॉवर एक सदाबहार साधन रहा है। 2001 से ही भारत अपनी सॉफ्ट पॉवर नीति के वजह से ही अफगानिस्तान के विभिन्न आयामों – आर्थिक, मानवीय और विकासात्मक सहायता के लिए 1 बिलियन डॉलर से अधिक अनुदान की सुविधा प्रदान कर रहा है ताकि 1996–2001 के मध्य अफगानिस्तान केविविध आयामों में क्षतिग्रस्त की आपूर्ति की जा सके। और पुनः विकास के मार्ग की तरफ आगे बढ़ सकें। भारत अपनी सहायता राशि के माध्यम से सड़क से लेकर संसद भवन के पुनर्निर्माण में सहयोग

प्रदान कर रहा है ताकि अफगानिस्तान कीअर्थव्यवस्था को विकास के मार्ग से जोड़ा जासके और साथ ही साथ वहाँ के लोगों के जीवनस्तर को भी सुधारा जा सके। वास्तव में देखाजाय तो अफगानिस्तान की भू– रणनीतिक महत्वकी दृष्टि से अनेक देशों ने केवल अपनी राष्ट्रीयहित को ध्यान मे रखकर सम्बन्ध स्थापित स्थापित किये हैचाहे उसका अफगानिस्तान पर नकारात्मक प्रभाव ही क्यों न पड़े। यही कारण है कि अफगानिस्तान की अवाम–जन भारत की सॉफ्ट पॉवर नीति कोज्यादा विश्वसनीय मानती है और अपनी राष्ट्रीय हित को सुरक्षित महसूस करती है। ध्यातव्य है कि पाकिस्तान के कई आतंकवादी संगठन अफगानिस्तान की भारत के विरुद्ध शरण स्थली के रूप में प्रयोग करने की वकालत करते हैं जो कहीं न कहीं वैश्विक स्तर पर अफगानिस्तान की छवि को धूमिल करने काकाम करती है। एक तरफ जहाँ पाकिस्तान, अफगानिस्तान को भारत के विरुद्ध अपनी नीतियों को थोपने काकाम करती है। वहीं दूसरी तरफ भारत अपनी सॉफ्ट पावर रणनीतिक के माध्यम से अफगानिस्तान की अवाम में विकासात्मक छवि को स्थापित करने काप्रयत्न कर रहा है ताकि भारत के विरुद्ध अफगानिस्तान मे पाकिस्तान की रणनीति को विफल किया जा सके इस शोध पत्र में उन तमाम सॉफ्ट पॉवर के कदम को भारत के द्वारा दिखाया गया में देखाया गया ताकि अफगानिस्तान में पाकिस्तान की नकारात्मक रणनीति की धूमिल किया जा सके।

**अध्ययन का उद्देश्य :–**

इस शोध पत्र में भारत–अफगानिस्तम के बीच भविष्य में बेहतर सम्बन्ध कैसे हो और अफगानिस्तान में पाकिस्तान की कुटनीतिक विफलता व भारत की सॉफ्ट पॉवर राजनीति का महत्वपूर्ण स्थान कैसे प्राप्त हो, उसी को सार गर्भित ढंग से समझने का प्रयत्न किया गया गया है।

**साहित्यावलोकनः–**

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए विभिन्न पुस्तकों तथा शोध पत्रों जैसे हर्ष वी. पंत की (2013) ''इंडियाज चेजिंग अफगानिस्तान पॉलिसी रीजनल एण्ड की ग्लोबल इम्प्लीकेशन्स,'' राजीव सीकरी (2017) ''भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीति'' प्रदीप सिंह राव (1997) की ''अफगानिस्तान भारतीय विदेश नीति के सन्दर्भ में,'' वी०एम० जैन की (2007)''''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' और प्रो० मंदिरा दत्ता (2015) ''पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान अशांत क्षेत्र वर्ल्ड फोकस अंक–68 नवम्बर आदि क्षेत्र का अध्ययन किया गया है।

**अध्ययन पद्धतिः–**

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अफगानिस्तान हमेशा से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में 'शक्ति प्रदर्शन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। अलग–अलग समयावधि में तमाम देश अफगानिस्तान पर अपने वैचारिक और रणनीतिक नियन्त्रण की जंग लड़ते आये है ताकि वो अफगानिस्तान पर अपनी पकड़ मजबूत कर सके। विभिन्न काल में इस खेल के खिलाड़ी आवश्यक रूप से परिवर्तित हुए है। लेकिन, अफगानिस्तान में खेल हमेशा यही रहा है कि उस पर नियन्त्रण किसका हो ?कौन सा देश अपनी सॉफ्ट पॉवर से उसे अधिक प्रभावित करने में सक्षम हो सके ताकि वो अफगानिस्तान के ग्रेट गेम को जीतने में सफल हो सके। भारत और पाकिस्तान के बीच भी अफगानिस्तान में यही रणनीतिक जंग चल रही है। देखा जाय तो इस युद्ध में भारत का पक्ष मजबूत दिखाई दे रहा है। अफगानिस्तान में अपनी साख को मजबूत बनाने की दिशा में भारत दिशा ने पाकिस्तान को पीछे छोड़ दिया है और और इसकी सबसे बड़ी वजह भारत की सॉफ्ट पॉवर नीति।

अफगानिस्तान का महत्व उसकी भौगोलिक और सामरिक स्थिति की वजह से है। यहाँ पर प्राकृतिक संसाधनो के बड़े भण्डार भी है। भारत और पाकिस्तान, अफगानिस्तान की भौगोलिक महत्ता और साथ ही साथ अन्य कारणों से भी अपनी स्थिति मजबूत रखना चाहते हैं। दोनों देशों की क्षेत्रीय और घरेलू स्थिरता के लिए भी अफगानिस्तान में स्थायित्व आवश्यक है। दोनों देश यह महसूस करते हैं कि अफगानिस्तान पर अपना प्रभाव स्थापित कर अपनी रणनीतिक दायरा और महत्ता को बढ़ा सकते हैं।

विश्व की महाशक्तियों के मध्य अपनी साख बढ़ाने और छवि को मजबूत करने के अतिरिक्त भारत और पाकिस्तान क्षेत्रीय स्तर भी अपनी पकड़ को मजबूत करना चाहते है। भारत को लगता है कि उसे विश्व की बड़ी ताकत बनने से पहले क्षेत्रीय स्तर पर अपनी महत्ता को सिद्ध करनी होगी। इसके लिए भारत लम्बे समय से कला, संस्कृति और फिल्मों के जरिए अपनी शक्ति का विस्तार करता रहा है। अफगानिस्तान के मामले में भारत की सॉफ्ट पॉवर वाली कूटनीति का उदेश्य वहाँ के लोगों के दिल और दिमाग को विजय पाना है ताकि वह अफगानिस्तान के साथअपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पोर राजनीतिक सम्बन्धों, की बुनियाद पर अपना प्रभाव बढ़ा सके और अफगानिस्तान में नए राष्ट्र के निर्माण व बढ़ास आर राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। हालांकि, लोग यह भी आरोप भारत पर लगा सकते कि वह क्षेत्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है अथवा वह फिर वैश्विक महाशक्तिबनना चाहता है। ध्यातव्य है कि कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता है कि सोफ्ट पॉवर के प्रयोग की वजह से भारत को अफगानिस्तान के लोगों का विश्वास जीतने और समर्थन हासिल करने में बड़ी मदद सफलता के रूप में दिखाई देती है।

भारत की इस कामयाबी से पाकिस्तान विचलित हो गया है, उसकी आँखो में भारत और अफगानिस्तान की ये नजदीकी चुभ रही है। हांलाकि पाकिस्तान चाहता है कि अफगानिस्तान में भारत के प्रभाव को कम करना है और अफगानिस्तान की जनता का झुकाव अपनी तरफ करना है। लेकिन, अपनी इसी संकुचित सोच की वजह से पाकिस्तान अपने इरादों में नाकाम रहा है। पाकिस्तान का सबसे नजरीकी पड़ोसी होने के अलावा, पाकिस्तान के अफगानिस्तान के साथ एकसदी –से भी ज्यादा पुराने सम्बन्ध है, उनका लाभ उठाकर पाकिस्तान, वहाँ अपना प्रभाव और बढ़ा सकता था।पाकिस्तान के अफगानिस्तान के साथ ऐतिहासिक धार्मिक, जातीय, भाषाई और व्यापारिक सम्बन्ध रहें है। इनकी वजह से पाकिस्तान और अफगानिस्ता स्वाभाविक रूप से मित्र बन सकते थे। लेकिन, पाकिस्तान इन बातों का लाभ उठाकर अफगानिस्तान से सम्बन्ध बेहतर करने में असफल रहा है। पाकिस्तान, अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए सैन्य शक्ति पर ज्यादा विश्वास करता है, ऐसा करने के चक्कर में वो सॉफ्ट पॉवरका प्रयोग ही नहीं करता, जबकि वह चाहता तो कला संस्कृति और शिक्षा की मदद से अपनी विदेश नीति के लक्ष्य अफगानिस्तान में हासिल कर सकता था। इसके अलावा अफगानिस्तान में सक्रिय कई आतंकवादी संगठनों को भी पाकिस्तान पनाह देता है। माना जाता है कि पाकिस्तान की हुकूमत इन संगठनों की समर्थन देती है। ये बात भी पाकिस्तान की छवि को नुकसान पहुँचाती है और उसके खिलाफ जाती है। अफगानिसान के लोग उन्हीं कारणों से पाकिस्तान को नापसन्द करते हैं। इसका परिणाम ये हुआ है कि वहाँ भारत का प्रभाव बढ़ा है और उसे अपनी सॉफ्ट पॉवर का लाभ हो रहा है। आज अफगानिस्तान के लोग पाकिस्तान के मुकाबले भारत को अपना सच्चादेश और हमदर्द समझते हैं।जिस तरह भारत ने अफगानिस्तान में क्रिकेट के विकास में योगदान दिया है, वह सॉफ्ट पॉवर से किसी देश का दिल जीतने की एक बड़ी मिसाल है। ध्यातव्य है कि अफगानिस्तान में क्रिकेट का खेल पाकिस्तान के उन शरणार्थी शिविरों से प्रारम्भ हुआ था, जहाँ 1980 के दशक में सोवियत संघ से युद्ध के चलते अफगानिस्तान से भागे लोग रह रहे थे। भारत ने अफगानिस्तान में क्रिकेट के विकास में जो योगदान दिया है, उससे दोनों देशों को

लाभ हुआ है। इसके अतिरिक्त भारत ने ग्रेटर नोयडा स्टेडियम को अफगानिस्तान की टीम के अभ्यास का आधिकारिक केन्द्र घोषित किया गया था क्योंकि अफगानिस्तान की टीम के पास अपने देश में प्रैक्टिस के लिए कोई स्टेडियम नहीं था। हालाही में देहरादून को अफगानिस्तान की टीम के दूसरे केन्द्र का दर्जा दिया गया है। भारत सरकार अफगानिस्तान की टीम को कोचिंग और तकनीकी सुविधाएँ भी मुहैया करा रही है। साथ ही भारत कांधार में एक स्टेडियम बनाने में भी मदद कर रहा है। भारत ने क्रिकेट प्रयोग केवल राष्ट्र निर्माण के माध्यम के तौर पर नही किया है बल्कि इसकी मदद से अफगानिस्तान से अपने सम्बन्ध भी बेहतर किये हैं। जबकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान का सबसे निकटतम पड़ोसी देश है, यहीं पर अफगानिस्तानक्रिकेट टीम की शुरुआत हुई। अगर पाकिस्तान चाहता तो क्रिकेट की बुनियाद पर अफगानिस्तान का दिल जीत सकता था लेकिन वह देखता ही रह गया और भारत ने इस मोर्चे पर बाजी अपने नाम कर ली।

भारत और अफगानिस्तान के मध्य फिल्मी सम्बन्धों का भी लम्बा इतिहास रहा है। इससे दोनों देशों के लोगों के मध्य सम्पर्क बढ़ता है। देखा जाय तो ये किसी भी सरकारी कोशिश से ज्यादा प्रभावशील है। अफगानिस्तान में तालिबान के कट्टरपंथी नियमों की वजह से समाज में रूढ़िवादी सोच है, इसीलिए अफगानिस्तान के लोग बॉलीवुड फिल्में बहुत पसंद करते हैं, क्योंकि अक्सर बॉलीवुड फिल्मों में नायक अन्याय के विरुद्ध लड़ता दिखाया जाता है। भारतीय फिल्मों की मदद से अफगानिस्तान के लोग शानदार जिंदगी की कल्पना कर पाते हैं। वे इन्हें देखकर अपने मनमे भी इंसाफ पाने की उम्मीद जगाते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर की काबुलीवाला जैसी कहानियाँ, भारत और अफगानिस्तान के सांस्कृतिक सम्बन्धों की कहानी बयां करती है। भारतीय सिनेमा हमेशाही अफगानिस्तान के लिए बड़ा बाजार रहा है।

इससे यह साफ जाहिर होता है कि फिल्मों ने भारत और अफगानिस्तान के मध्य करीबी सम्बन्ध को प्रकट करने करने का काम किया है दोनों देशों के लोग फिल्मों की वजह से एक–दुसरे के लिए अपनापन महसूस करते है। भारत अफगानिस्तान में शिक्षा के प्रचार–प्रसार बहुत नजदीकी से जुड़ा हुआ है और बहुमूल्य योगदान दे रहा है। अफगानिस्तान में शिक्षा के क्षेत्र का बहुत दयनीय अवस्था है। इसके लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा ही वहां नहीं है। इसके अतिरिक्त लिंग के आधार पर लड़के और लड़कियों बहुत भेदभाव देखने को मिलता है। इसके साथ ही साथ वहाँ प्रशिक्षित अध्यापक भी नहीं है। भारत ने अफगानिस्तान के छात्रों के लिए स्कॉलरशिप की भी सुविधा प्रदान कर रहा है ताकि हजारों छात्रों को शिक्षा से वंचित न होना पड़े। इसी स्कॉलरशिप का लाभ उठाकर आज हजारों बच्चे भारत में पढ़ रहे है और उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। स्किल डेवलपमेंट में भी उनकी मदद की जा रही है। इसमें अफगानिस्तान की महिलाएं भी शामिल है। इस समय भारत दस लाख डॉलर की मदद से हाईस्कूल के प्रोजेक्ट के विकास में अफगानिस्तान की मदद कर रहा है। भारत ने हमेशा ही अफगानिस्तान के अनेक नस्लीय समुदायों के साथ बेहतर सामंजस्य बनाने का प्रयत्न किया है और उसमें भी खासतौर से पश्तून समुदाय से। इस समुदाय के लोग पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमा पर बहुतायत संख्या में रहते हैं। ये लोग भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते आए है। सॉफ्ट पॉवर के औजार के रूप में शिक्षा का इस्तेमाल भारत के हित में रहा है, इससे भारत अफगानिस्तान के लोगों का विश्वास जीतने में कामयाब रहा है।

अफगानिस्तान में भारत स्वास्थ्य और इलाज के क्षेत्र में भी बहुत योगदान दे रहा है। भारत ने अफगान से सोसाइटी प्रोग्राम के लिए 50 लाख डॉलर की मदद दी है ताकि वहां के बच्चों के दिल की बीमारी का इलाज हो सके। भारत और अफगानिस्तान के बीच मेडिकल टुरिज्म का एक बहुत बड़ा बाजार विकसित हो गया है। इससे दोनों देशों के लोगों के बीच सम्पर्क मे वृद्धि हुई है। 2014 के पश्चात से भारत ने अफगानिस्तान के लोगों को बड़ी उदारता से

वीजा दिये है। इससे ज्यादा से ज्यादा मरीज भारत आकर इलाज करा पा रहे है क्योंकि उनके अपने देश में इलाज की अच्छी सुविधाएं नहीं है। भारत के सरकारी और निजी अस्पताल खुले दिल से अफगानिस्तान के मरीजों का स्वागत और इलाज करते हैं और उन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि कि आपसी संवाद की समझने के लिए अनुवादक की भी सुविधा भारत उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही साथ भारत अपने विभिन्न अस्पतालों में कर्मचारियों को भी अफगानिस्तान की भाषाओं की ट्रेनिंग दी गई है। भारत के अच्छे माहौल और अस्पताल के कर्मचारियों के अच्छे व्यवहार की वजह से इलाज के लिए भारत आने आने वाले अफगानियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। वहीं पाकिस्तान जाने के दौरान लगातार सुरक्षा के सख्त नियमों की वजह से अफगानिस्तान के नागरिकों ने इलाज के लिए वहां जाना छोड ही दिया है। भारत में वीजा के सरल नियमों और इलाज की बेहतर सुविधाओं कीवजह से आज अफगानिस्तान के नागरिक पाकिस्तान के बजाय भारत आना बेहतर समझते हैं। इस वजह से भी दोनों देशों के सम्बन्ध और बेहतर हो रहे है।

## निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि अफगानिस्तान में अपनी शक्ति के बजाय सॉफ्ट पॉवर के प्रयोग का लाभ भारत को हो रहा है। दोनों देशों के सम्बन्ध बेहतर हो रहे है। किन्ही दो देशों के बीच सम्बन्ध बेहतर करने में सॉफ्ट पॉवर का अहम रोल होता है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है। इसका ये मतलब नहीं कि हम अपनी सामरिक शक्ति की पूर्ण रूप से नजरअंदाज कर दे। दोनों के बीच सही सन्तुलन और दोनों के मेल से ही विदेश नीति का मकसद पूरा किया जा सकता है। अगर पाकिस्तान की इच्छा अफगानिस्तान में स्थिरता कायम करने और उससे सम्बन्ध बेहतर करने की है तो उसे चाहिए कि वो सॉफ्ट पॉवर का इस्तेमाल ज्यादा करे न कि अपनी सैन्य शक्ति की प्रभुत्व का प्रयोग करे और ये अफगानिस्तान को सामरिक शक्ति का भय ना दिखायें।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–


1. बिस्वाल तपन ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' ओरियंट ब्लैक स्वॉन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली 2016 पृ0 सं0 185–196
2. वहीं पृ0 सं0 224–235
3. राव प्रदीपसिंह ''अफगानिस्तान समस्या भारतीय विदेश नीति के सन्दर्भ में'' प्रिन्ट वैल पहिलशिंग जयपुर 1997 पृ0 सं0 08–15
4. वहीं पृ0 सं0 102–110
5. सीकरी राजीव''भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीति'' सेज पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट निमिटेड, नई दिल्ली 2017 पृ0 सं0 50–56
6. वहीं पृ0 सं0 210–220
7. वहीं पृ0 सं0 280–290
8. जैन बी. एम. ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 2007 पृ0 सं0 340–348
9. वैदिक डॉ. वेद प्रताप ''अफगानिस्तान में सोवियत अमरीकी प्रतिस्पर्धा'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली पृ0 सं0 40–45
10. पंत पुस्पेश ''21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' टाटा मैकग्रा हिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली 2014पृ0 सं0 15–25

11. वैदिक डॉ. वेद प्रताप''अफगानिस्तान कला आज और कल'' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2002 पृ0 सं0 118–124

12. दत्ता, प्रोफेसर मंदिरा ''2014 के बाद अफगानिस्तान में भारत की लघु विकास परियोजनाएँः मजबूतियां और अवसर'' वर्ल्ड फोकस दिल्ली अंक 36 मार्च 2015 पृ0 सं0 37–40